मूर्ख बगुला और नेवला

जंगल के एक बडे वट-वृक्ष की खोल मे बहुत से बगुले रहते थे । उसी वृक्ष की जड मे एक साँप भी रहता था । वह बगलो के छोटे-छोटे बच्चो को खा जाता था ।

एक बगुला साँप द्वारा बार-बार बच्चो के खाये जाने पर बहुत दुःखी और विरक्त सा होकर नदी के किनारे आ बैठा ।

उसकी आँखो मे आँसू भरे हुए थे । उसे इस प्रकार दुःखमग्न देखकर एक केकडे ने पानी से निकल कर उसे कहा :-"मामा ! क्या बात है, आज रो क्यों रहे हो ?"

बगुले ने कहा - "भैया ! बात यह है कि मेरे बच्चो को साँप बार-बार खा जाता है । कुछ उपाय नही सूझता, किस प्रकार साँप का नाश किया जाय । तुम्ही कोई उपाय बताओ ।"

केकडे ने मन मे सोचा, 'यह बगला मेरा जन्मवैरी है, इसे ऐसा उपाय बताऊंगा, जिससे साँप के नाश के साथ-साथ इसका भी नाश हो जाए। यह सोचकर वह बोला -"मामा! एक काम करो, मांस के कुछ टुकडे लेकर नेवले के बिल के सामने डाल दो । इसके बाद बहुत से टुकडे उस बिल से शुरु करके साँप के बिल तक बखेर दो । नेवला उन टुकडो को खाता-खाता साँप के बिल तक आ जायगा और वहाँ साँप को भी देखकर उसे मार डालेगा ।"

बगुले ने ऐसा ही किया । नेवले ने साँप को तो खा लिया किन्तु साँप के बाद उस वृक्ष पर रहने वाले बगुलो को भी खा डाला।

बगुले ने उपाय तो सोचा, किन्तु उसके अन्य दुष्परिणाम नही सोचे। अपनी मूर्खता का फल उसे मिल गया ।

सीख: करने से पहले सोचो।

मूर्ख बगुला और नेवला

जंगल के एक बड़े वट-वृक्ष की खोल में बहुत से बगुले रहते थे। उसी वृक्ष की जड़ में एक साँप भी रहता था। वह बगुलों के छोटे-छोटे बच्चों को खा जाता था।
एक बगुला साँप द्वारा बार-बार बच्चों के खाए जाने पर बहुत दुःखी और विरक्त सा होकर नदी के किनारे जा बैठा।
उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। उसे इस प्रकार दुःखमग्न देखकर एक केकड़े ने पानी से निकल कर उसे कहा :-"मामा ! क्या बात है, आज रो क्यों रहे हो?"
बगुले ने कहा - "भैया ! बात यह है कि मेरे बच्चों को साँप बार-बार खा जाता है। कुछ उपाय नहीं सूझता, किस प्रकार साँप का नाश किया जाय। तुम्हीं कोई उपाय बताओ।"
केकड़े ने मन में सोचा, 'यह बगुला मेरा जन्मवैरी है, इसे ऐसा उपाय बताऊंगा, जिससे साँप के नाश के साथ-साथ इसका भी नाश हो जाए। यह सोचकर वह बोला -"मामा! एक काम करो, मांस के कुछ टुकड़े लेकर नेवले के बिल के सामने डाल दो। इसके बाद बहुत से टुकड़े उस बिल से शुरू करके साँप के बिल तक बिखेर दो। नेवला उन टुकड़ों को खाता-खाता साँप के बिल तक भी जायगा और वहाँ साँप को भी देखकर उसे मार डालेगा।"
बगुले ने ऐसा ही किया। नेवले ने साँप को तो खा लिया किन्तु साँप के बाद उस वृक्ष पर रहने वाले बगुलों को भी खा डाला।
बगुले ने उपाय तो सोचा, किन्तु उसके अन्य दुष्परिणाम नहीं सोचे। अपनी मूर्खता का फल उसे मिल गया।

सीख: करने से पहले सोचो।

अनुवाद - विष्णु शर्मा